ऋग्वेद मन्त्र (१.३५.२)

सविता देवता (सूर्य) की महिमा

आध्यात्मिक, पारंपरिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

"प्राचीन वैदिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का अद्भुत समन्वय"

प्रस्तुतकर्ता

आचार्य कपिल

संपर्क: 8756390767

द्वारा

ऋषि विश्वमित्र विद्या Foundation

ऋग्वेद मन्त्र (१.३५.२): सविता देवता (सूर्य) की महिमा

ऋग्वेद के प्रथम मंडल के पैंतीसवें सूक्त का यह दूसरा मन्त्र भगवान सूर्य (सविता देवता) के ब्रह्मांडीय संचालन, उनके स्वरूप और उनकी गति का अत्यंत गहरा और वैज्ञानिक वर्णन प्रस्तुत करता है।

आ कृ॒ष्णेन॒ रज॑सा॒ वर्त॑मानो नि॒वे॒शय॑न्न॒मृत॑ं॒ मर्त्यं॑ च ।
हि॒र॒ण्ययेन॑ सवि॒ता रथे॒ना दे॒वो या॑ति॒ भुव॑नानि॒ पश्य॑न् ॥

पद-पाठ:

आ । कृ॒ष्णेन॑ । रज॑सा । वर्त॑मानः । नि॒ऽवे॒शय॑न् । अ॒मृत॑म् । मर्त्य॑म् । च॒ ।
हि॒र॒ण्ययेन । स॒वि॒ता । रथे॑न । आ । दे॒वः । या॒ति॒ । भुव॑नानि । पश्य॑न् ॥

पदवार शब्दार्थ (मूल व्याकरण और व्युत्पत्ति आधारित)

शब्द	व्याकरण / मूल रूप	अर्थ एवं व्याख्या
आ	(अव्यय)	समंतात् (चारों ओर से / सर्वत्र)
कृष्णेन	(विशेषण)	आकर्षण करने वाले अथवा कृष्णवर्ण (काले/अंधकारयुक्त) लोक से
रजसा	(संज्ञा)	लोकसमूह (पृथ्वी आदि अंतरिक्ष लोक/धूलि) के साथ
वर्तमानः	(कृदंत)	गमन करते हुए / निरन्तर चलते हुए
निवेशयन्	(कृदंत)	अपने-अपने सामर्थ्य या उचित स्थान पर स्थापित करते हुए
अमृतम्	(संज्ञा)	वेदविद्या द्वारा मोक्षसाधक सत्य ज्ञान या वृष्टि द्वारा अमृत रूपी रस (प्राण/देवता) को
मर्त्यम्	(संज्ञा)	कर्मप्रलय और काल के अधीन मरणधर्मयुक्त प्राणी/शरीर को
च	(अव्यय)	और (समुच्चय के अर्थ में)
हिरण्ययेन	(विशेषण)	ज्योतिर्मय, तेजोमय अथवा सुवर्णमय (स्वर्ण निर्मित)
सविता	(संज्ञा)	समस्त चराचर जगत को उत्पन्न करने वाला और प्रेरित करने वाला सूर्य
रथेन	(संज्ञा)	गतिमान रथ (प्रकाश के वेग / वाहन) द्वारा
देवः	(संज्ञा)	दीप्तिमान, प्रकाशक, ज्ञानस्वरूप परमात्मा या सूर्य
याति	(क्रिया)	गमन करता है / प्राप्त होता है

शब्द	व्याकरण / मूल रूप	अर्थ एवं व्याख्या
भुवनानि	(संज्ञा)	समस्त लोकों को / उत्पन्न होने वाले भूतों को
पश्यन्	(कृदंत)	देखते हुए / प्रकाशयित और अवेक्षमाण करते हुए

१. पारंपरिक एवं आचार्यीय अनुवाद

सायणाचार्य का भाष्य

"वह देव सविता (सूर्य), जो सूर्योदय से पूर्व के कृष्णवर्ण अंतरिक्ष लोक से निरंतर गमन करते हुए आ रहे हैं, जो अमर देवताओं और मरणशील मनुष्यों (प्राण और शरीर) दोनों को उनके उचित स्थानों व कार्यों में स्थापित करते हैं, वे प्रकाशमान देवता सूर्य सुवर्णमय रथ पर आरूढ़ होकर, समस्त लोकों को देखते और प्रकाशित करते हुए हमारे समीप आते हैं।"

महर्षि दयानन्द सरस्वती का भाष्य

"सबको उत्पन्न करने वाला, प्रकाशमान, कामना करने योग्य वह सविता (सूर्य) जो सब ओर से आकर्षण करने वाले लोकसमूह (पृथ्वी आदि) के साथ वर्तमान (चल रहा) है, जो वेदविद्या द्वारा मोक्ष को साधने वाले सत्य ज्ञान और वृष्टि द्वारा अमृतात्मक रस को तथा कर्म-प्रलय को प्राप्त होने वाले मरणधर्मी प्राणी को निरन्तर अपने-अपने सामर्थ्य में स्थापित करता हुआ, ज्योतिर्मय रथ से सब ओर से गमन करता है तथा सब भुवनों को देखता हुआ (प्रकाशित करता हुआ) चलता है।"

२. वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

आधुनिक विज्ञान और खगोलशास्त्र (Astronomy & Physics) के दृष्टिकोण से यदि इस मन्त्र का विश्लेषण किया जाए, तो यह प्राचीन वैदिक ऋषियों की अद्भुत वैज्ञानिक दूरदर्शिता को उजागर करता है:

गुरुत्वाकर्षण बल (Gravitational Attraction)

मन्त्र में 'कृष्णेन रजसा' शब्द आया है। महर्षि दयानन्द ने 'कृष्णेन' का अर्थ "कर्षण करने वाले (आकर्षण शक्ति)" किया है। आधुनिक भौतिकी के अनुसार, सूर्य का प्रबल गुरुत्वाकर्षण बल (Gravitational Force) ही सौरमंडल के सभी ग्रहों (रजसा / लोकसमूह) को अपनी कक्षा में बाँधकर रखता है। सूर्य इस आकर्षण शक्ति के साथ अंतरिक्ष में निरंतर गतिमान है।

परिक्रमण और गति (Orbital Motion)

'वर्तमानो याति' यानी निरंतर गतिशील रहना। विज्ञान प्रमाणित करता है कि सूर्य स्थिर नहीं है; यह हमारी आकाशगंगा (Milky Way Galaxy) के केंद्र के चारों ओर लगभग 220 किलोमीटर प्रति सेकंड की गति से परिक्रमा कर रहा है, और इसके साथ इसके सभी ग्रह भी यात्रा करते हैं।

ऊर्जा और जीवन चक्र (Energy & Ecosystem)

'अमृतं मर्त्यं च निवेशयन्' — सूर्य की ऊर्जा (प्रकाश और ऊष्मा) पृथ्वी पर जीवन का आधार है। यह पौधों में प्रकाश संश्लेषण (Photosynthesis) के माध्यम से अन्न और रस ('अमृत') उत्पन्न करता है, जिससे मरणधर्मी प्राणी ('मर्त्य') जीवित रहते हैं और अपने जैविक चक्र को पूरा करते हैं.

ज्योतिर्मय रथ (Radiant Chariot)

'हिरण्ययेन रथेन' — 'हिरण्य' का अर्थ सोना या तीव्र ज्योति/ऊर्जा है। विज्ञान की दृष्टि से सूर्य का यह 'रथ' और कुछ नहीं बल्कि इसकी विद्युत-चुंबकीय तरंगें (Electromagnetic Radiation) और फोटोन (Photons) का प्रकाशपुंज है, जो अंतरिक्ष को चीरता हुआ प्रकाश की गति से ब्रह्मांड के हर कोने तक पहुँचता है और समस्त लोकों को प्रकाशमान करता है।